Prepp
Your Personal Exams Guide

2023

हिन्दी (हिन्दी प्रस्ताव सहित)

निर्धारित समय : 3 घण्टे | अधिकतम अंक : 100

प्रश्न पत्र के लिए विशिष्ट निर्देश

1. सभी प्रश्नों के उत्तर लिखना अनिवार्य है।
2. प्रत्येक प्रश्न / भाग के लिए नियत अंक उसके सामने दिए गए हैं।
3. प्रश्न का उत्तर देने से पहले प्रश्न संख्या दर्शाये।
4. प्रश्न के भागों का उत्तर एक साथ देवें।
5. प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।

Prepp
Your Personal Exams Guide

प्रश्न 1. हिन्दी में अनुवाद कीजिए । 10 अंक

Poetry is the health and final spirit of all knowledge. Emphatically may it be said of the poet, as Shakespear hath said of man, "he looks before and after." He is the rock of defence for human nature: as upholder and preserver, carrying everywhere with him relationship and love. The poet binds together by passion and knowledge the vast empire of human society. As it is spread over the whole earth. Poetry is the first and last of all knowledge, it is immortal as heart of man. In the study of poetry, therefore, As in the study of all other kinds of literature, our attention must first be directed to the poet himself, to his personality and outlook upon the world, to the interpretation of life expressly given by or held in solution in his work, to the individual note in it. However, deeply we may presently become interested in questions of art and form, origins and historical importance, these primary aspects of poetry must never be permitted to slip out of our sight.

प्रश्न 2. गन्दी बस्ती की सफाई करने और सुविधाओं की माँग करते हुए विकास प्राधिकरण को एक पत्र लिखिए । 10 अंक

अथवा

जीवन-बीमा की रकम के भुगतान के लिए जीवन बीमा निगम को एक पत्र लिखिए ।

प्रश्न 3. निम्नलिखित अवतरण का सार एक-तिहाई शब्दों में लिखिए । 10 अंक

'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' का आज बहुत जोर है । कलाकार हो, साहित्यकार हो, दूरसंचार माध्यम हो, पत्रकार हो सभी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का राग अलापते दिखायी देते हैं । मगर विडंबना यह है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का नारा बुलन्द करने वाले ही इसका सर्वाधिक दुरुपयोग करते नजर आते हैं । संविधान में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार दिया गया है । प्रत्येक व्यक्ति अपनी बात कहने के लिये स्वतंत्र है । उसी प्रकार दूसरा पक्ष उसके विरोध में बात रखने के लिये भी स्वतंत्र है । लोकतंत्र में ऐसी स्वतंत्रता होनी भी चाहिये । लेकिन यह भी ध्यान रखना चाहिये कि जिस प्रकार हमें अपनी बात कहने की स्वतंत्रता है, उसी प्रकार दूसरे को भी अपनी बात रखने की स्वतंत्रता है । दूसरे पक्ष की बात भले ही न माने, पर सुनने का साहस व धैर्य तो रखना ही चाहिये । हमारे देश में 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' का उपयोग अधिकार के रूप में नहीं, अपितु एक हथियार के रूप में किया जाता है । नारा लगाने वाले अपनी बात कहने के लिये तो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता चाहते हैं, पर उनकी बात के विपरीत पक्ष रखने वालों को उनकी बात कहने देना नहीं चाहते । वास्तव में ऐसे लोग अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं, बल्कि आधिकारिक स्वच्छन्दता चाहते हैं ।

प्रश्न 4.(क) सरल हिन्दी में व्याख्या कीजिए । 05 अंक

अच्छे साहित्य में जाति, भाषा, प्रान्तीयता को तोड़ने की क्षमता होती है । राष्ट्र, देश, देशभक्ति सामने होने पर सारे भेद, मतभेद, भिन्नता एक ओर रह जाती है । साहित्यकारों को साहित्य के इस सामर्थ्य को पहचानकर वर्तमान की चुनौतियों से दो-चार होना चाहिए । आज मुद्रण की, अनुवाद की, साहित्यिक संस्थाओं और साहित्य अनुदानों की कमी नहीं है । ऐसे में साहित्य को अधिक धारदार होना चाहिए था, पर ऐसा है नहीं ।

अथवा

समाज का अस्तित्व संस्कृति और राष्ट्र की अवधारणा के बिना असंभव है । लोगों के एक समूह को एक स्थान पर एकत्र कर देने मात्र से समाज नहीं बनता । लोगों के समूह का सहअस्तित्त्व जब मूल्यों, परम्पराओं, विचार, सहजीवन तथा इतिहास के आधार पर होता है तभी एक संघ, समरस समाज अस्तित्त्व में आता है । इन अवधारणाओं तथा मूल्यों के आधार पर सदियों से चलनेवाले एक राष्ट्र के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं ।

प्रश्न 4.(ख) सरल हिन्दी में व्याख्या कीजिए । 05 अंक

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाँहि ।
सब अँधियारा मिटि गया, दीपक देख्या माँहि ।।
तूँ तूँ करता तूँ भया, मुझ में रही न हूँ ।
वारी फेरी बलि गई जित देखौं तित तूँ ।।

अथवा

दुख की पिछली रजनी बीच विकसता सुख का नवल प्रभात;
एक परदा है झीना नील छिपाये है जिसमें सुख गात ।
जिसे तुम समझे हो अभिशाप, जगत की ज्वालाओं का मूल,
ईश का वह रहस्य वरदान कभी मत इसको जाओ भूल ।

प्रश्न 5.(क) निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए । 2.5 अंक

(i) अल्प
(ii) खास
(iii) पूर्ण
(iv) नेकी
(v) स्वाभाविक

Prepp
Your Personal Exams Guide

प्रश्न 5.(ख) निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखिए । 2.5 अंक

(i) याज्ञवल्क
(ii) आर्शीवाद
(iii) विभिषिका
(iv) आर्द
(v) सशंकित

प्रश्न 6.(क) निम्नलिखित शब्दों के संधि-विच्छेद कीजिए । 2.5 अंक

(i) अतीव
(ii) भवन
(iii) सदैव
(iv) उन्नति
(v) मनोबल

प्रश्न 6.(ख) निम्नलिखित वाक्यांशो के लिए एक-एक शब्द लिखिए । 2.5 अंक

(i) अचानक होनेवाला
(ii) जिसे टाला न जा सके
(iii) पहले कभी न होनेवाला
(iv) पूरब और उत्तर दिशा का कोण
(v) जिसका भाग्य अनुकूल न हो

प्रश्न 7. निम्नलिखित युग्मों में दिये गये शब्दों को अपने बनाये वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि दोनों के पारस्परिक अन्तर यथासंभव स्पष्ट हो जाएँ । 05 अंक

(i) कंकाल-कंगाल
(ii) कुल-कूल
(iii) चित्त-चित
(iv) पाश-पास
(v) मुख-मुख्य

Prepp
Your Personal Exams Guide

प्रश्न 8. निम्नलिखित कहावतों/मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए । 05 अंक

(i) आगे कुआँ पीछे खाई

(ii) एक पंथ दो काज

(iii) लोहा लेना

(iv) हाथ मलना

(v) नाक में दम करना

प्रश्न 9. नीचे दिये गए अवतरण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उससे संबंधित प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

हिन्दी भाषा और साहित्य हमारा साध्य ही नहीं, साधन भी है, बल्कि हमारी वर्तमान परिस्थिति में हममें अधिकांश के लिए साधन अधिक है, साध्य कम । हिन्दी की प्रतिद्वन्द्विता न तो किसी प्रान्तीय भाषा से ही है और न संस्कृत, प्राकृत आदि प्राचीन भाषाओं से ही । आज से कई सौ वर्ष पहले जो स्थान संस्कृत का था और आज जो स्थान अँगरेजी का है, हिन्दी उसी की अधिकारिणी है । वह संसार के समस्त व्यावहारिक और पारमार्थिक ज्ञान-विज्ञान और यावत् विषयों को करोड़ों आदमियों तक पहुँचाने का साधन बनना चाहती है । भारतवर्ष में आंशिक रूप से किसी युग में संस्कृत इस कार्य को करने में समर्थ हो सकी थी; पर वह पण्डितों की भाषा थी, और इसीलिए जहाँ वह तत्तद् विषयों को योग्यतापूर्वक आलोचित कर सकी, वहाँ करोड़ों तक तो क्या, हजारों तक पहुँचाने में भी असमर्थ रही । अँगरेजी विदेशी भाषा है, इसलिए वह भी यह कार्य उस योग्यता के साथ इस देश में नहीं कर सकी, जिसके साथ इंगलैण्ड आदि देशों में वह करती है । हिन्दी का दावा है कि वह इन दोनों भाषाओं के दोषों से मुक्त है । संस्कृत के समान वह केवल पण्डितों की भाषा नहीं है, फिर भी संस्कृत की समस्त सम्पत्ति की वह अपनी अन्यान्य भगिनी भाषाओं की भाँति स्वाभाविक अधिकारिणी है । दूसरी तरफ अँगरेजी की भाँति वह विदेशी भाषा नहीं है, यद्यपि एक ही युग में पैदा होने के कारण वह अँगरेजी के उन सभी गुणों को आत्मसात् करने का उचित दावा रखती है जिन्हें युग-धर्म ने अँगरेजी में आरोपित किया है ।

(क) इस गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए । 02 अंक

(ख) रेखांकित अंशो की व्याख्या कीजिए । 04 अंक

(ग) हिन्दी भाषा 'साध्य से अधिक साधन' क्यों है ? 04 अंक

प्रश्न 10. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर हिन्दी में निबंध लिखिए : 30 अंक

(i) साहित्य में भावात्मक एकता

(ii) जनसंख्या विस्फोट और नियंत्रण

(iii) विश्व व्यापार में भारत की बढ़ती भागीदारी

(iv) लोकतंत्र में जनता की भूमिका

Prepp
Your Personal Exams Guide